Nrityanjali Multidisciplinary International Research Journal

Volume 2, Issue 3, July - September 2026

E-ISSN: 3108-1452

NMIRJ Website: https://nrityanjaliresearchjournal.com/home/ Email: info@nrityanjaliresearchjournal.com

राजकीय आश्रम पद्धति विद्यालय एवं राजकीय इण्टर कॉलेज में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के आत्मविश्वास का विद्यालयी वातावरण के सन्दर्भ में अध्ययन

शुभम कुमार
शोधार्थी
जे0एस0 हिन्दू स्नतकोत्तर,
महाविद्यालय, अमरोहा
सम्बद्ध :– महात्मा ज्योतिबाफुले रुहेलखण्ड
विश्वविद्यालय, बरेली।

डा0 आभा सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर
जे0एस0 हिन्दू स्नतकोत्तर,
महाविद्यालय, अमरोहा

https://doi.org/10.5281/zenodo.23255081

सारांश

शिक्षा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास का महत्वपूर्ण साधन है, जिसके माध्यम से केवल ज्ञान एवं शैक्षिक योग्यता का विकास ही नहीं होता, बल्कि व्यक्तित्व, सामाजिक व्यवहार, भावनात्मक स्थिरता, निर्णय लेने की क्षमता, नेतृत्व, आत्म–अभिव्यक्ति तथा आत्मविश्वास का भी विकास होता है। विशेष रूप से किशोरावस्था विद्यार्थियों के जीवन की महत्वपूर्ण अवस्था है, जिसमें अनेक शारीरिक, मानसिक, भावात्मक एवं सामाजिक परिवर्तन होते हैं। इस अवस्था में विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों के व्यक्तित्व तथा आत्मविश्वास के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। विद्यालयी वातावरण से आशय विद्यालय में उपलब्ध भौतिक सुविधाओं, शिक्षक–विद्यार्थी सम्बन्धों, सहपाठी सम्बन्धों, अनुशासन, सुरक्षा, शैक्षिक वातावरण, सहयोग, प्रोत्साहन तथा विद्यार्थियों की सहभागिता से सम्बन्धित परिस्थितियों से है। सकारात्मक एवं सहयोगपूर्ण विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों में सुरक्षा, सम्मान, अपनत्व तथा अपनी क्षमताओं के प्रति विश्वास की भावना विकसित करने में सहायक हो सकता है, जबकि भय, उपेक्षा, पक्षपात, अत्यधिक दण्ड तथा असुरक्षित वातावरण आत्मविश्वास को कमजोर कर सकता है। राजकीय आश्रम पद्धति विद्यालयों में विद्यार्थी आवासीय व्यवस्था के कारण अपना अधिकांश समय विद्यालय परिसर में व्यतीत करते हैं, इसलिए वहाँ का वातावरण उनके दैनिक जीवन एवं व्यक्तित्व विकास को अधिक निकटता से प्रभावित कर सकता है। दूसरी ओर राजकीय इण्टर कॉलेजों में विभिन्न सामाजिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों को नियमित विद्यालयी वातावरण प्राप्त होता है। प्रस्तुत अध्ययन में आत्मविश्वास से आशय विद्यार्थियों के अपनी योग्यता, क्षमता, निर्णय लेने, सामाजिक सम्पर्क, आत्म–अभिव्यक्ति तथा कठिन परिस्थितियों का सामना करने के प्रति विश्वास से है, जबकि विद्यालयी वातावरण से आशय विद्यालय की भौतिक, सामाजिक, शैक्षिक एवं भावात्मक परिस्थितियों के प्रति विद्यार्थियों की अनुभूति एवं धारणा से है। अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य राजकीय आश्रम पद्धति विद्यालय एवं राजकीय इण्टर कॉलेज में अध्ययनरत विद्यार्थियों के आत्मविश्वास पर विद्यालयी वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना था। इसके लिए यह परिकल्पना निर्धारित की गई कि विद्यार्थियों के आत्मविश्वास एवं विद्यालयी वातावरण के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध होगा। स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों के आत्मविश्वास एवं विद्यालयी वातावरण के मध्य मध्यम स्तर का धनात्मक एवं सार्थक सम्बन्ध विद्यमान है अर्थात् जिन विद्यार्थियों द्वारा विद्यालयी वातावरण को अधिक अनुकूल, सहयोगपूर्ण एवं सकारात्मक अनुभव किया गया, उनमें आत्मविश्वास का स्तर भी अपेक्षाकृत अधिक पाया गया। अतः अध्ययन की परिकल्पना स्वीकार की गई।

मुख्यशब्द – राजकीय आश्रम पद्धति विद्यालय, राजकीय इण्टर कॉलेज, विद्यार्थी, आत्मवि"वास, विद्यालयी वातावरण

प्रस्तावना

शिक्षा मानव जीवन के सर्वांगीण विकास का एक महत्वपूर्ण साधन है। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति केवल ज्ञान और सूचनाएँ ही प्राप्त नहीं करता, बल्कि उसके व्यक्तित्व, व्यवहार, भावनाओं, सामाजिक सम्बन्धों, नैतिक मूल्यों, निर्णय लेने की क्षमता तथा आत्मविश्वास का भी विकास होता है। विद्यालय शिक्षा की वह प्रमुख संस्था है जहाँ विद्यार्थी

Nrityanjali Multidisciplinary International Research Journal

Volume 2, Issue 3, July - September 2026

E-ISSN: 3108-1452

NMIRJ Website: https://nrityanjaliresearchjournal.com/home/ Email: info@nrityanjaliresearchjournal.com

अपने जीवन के महत्वपूर्ण विकासात्मक चरण से गुजरता है। विद्यालय में विद्यार्थी प्रतिदिन अनेक प्रकार की शैक्षिक, सामाजिक, भावात्मक एवं सह–पाठ्यक्रमीय गतिविधियों में भाग लेते हैं। इन अनुभवों का प्रभाव उसके व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों पर पड़ता है। विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि, सामाजिक व्यवहार, नेतृत्व क्षमता, निर्णय लेने की योग्यता तथा जीवन की विभिन्न परिस्थितियों का सामना करने की क्षमता में आत्मविश्वास की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जिस विद्यार्थी में स्वयं के प्रति विश्वास, अपनी क्षमताओं के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण तथा कठिन परिस्थितियों में प्रयास करते रहने की भावना होती है, वह सामान्यतः अपने कार्यों को अधिक प्रभावी ढंग से सम्पन्न करने का प्रयास करता है। इसके विपरीत आत्मविश्वास की कमी विद्यार्थी में संकोच, असफलता का भय, निर्णय लेने में कठिनाई, सामाजिक दूरी तथा शैक्षिक कार्यों के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न कर सकती है। इसलिए विद्यार्थियों के आत्मविश्वास के विकास को विद्यालयी शिक्षा के महत्वपूर्ण उद्देश्यों में सम्मिलित किया जाना आवश्यक है। आत्मविश्वास व्यक्ति की उस मानसिक एवं भावात्मक स्थिति को कहा जा सकता है जिसमें व्यक्ति को अपनी क्षमताओं, योग्यताओं तथा निर्णय लेने की क्षमता पर विश्वास होता है। आत्मविश्वासी विद्यार्थी अपनी बात को उचित रूप से व्यक्त करने, प्रश्न पूछने, नई गतिविधियों में भाग लेने, कठिन कार्यों को स्वीकार करने तथा समस्याओं के समाधान के लिए प्रयास करने में अपेक्षाकृत अधिक सहज होता है। आत्मविश्वास व्यक्ति के जन्मजात गुण के रूप में स्थिर नहीं रहता, बल्कि परिवार, विद्यालय, मित्र समूह, सामाजिक परिस्थितियों, उपलब्धियों, असफलताओं तथा व्यक्ति को प्राप्त प्रोत्साहन के आधार पर इसमें परिवर्तन होता रहता है। विशेष रूप से किशोरावस्था आत्मविश्वास के विकास की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण अवस्था है। इस अवस्था में विद्यार्थी शारीरिक, मानसिक, भावात्मक एवं सामाजिक परिवर्तनों से गुजरता है। वह अपने व्यक्तित्व, क्षमताओं तथा सामाजिक पहचान के प्रति अधिक सजग होने लगता है। इस समय शिक्षकों का व्यवहार, सहपाठियों के साथ सम्बन्ध, विद्यालय में मिलने वाला सम्मान, शैक्षिक वातावरण तथा विभिन्न गतिविधियों में भाग लेने के अवसर उसके आत्मविश्वास को प्रभावित कर सकते हैं। अतः विद्यालयी वातावरण और विद्यार्थियों के आत्मविश्वास के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन शैक्षिक दृष्टि से विशेष महत्व रखता है। विद्यालयी वातावरण से आशय विद्यालय में विद्यमान उन समस्त भौतिक, सामाजिक, शैक्षिक, प्रशासनिक एवं भावात्मक परिस्थितियों से है जिनके बीच विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करता है। विद्यालयी वातावरण में विद्यालय का भौतिक ढाँचा, कक्षा–कक्ष की व्यवस्था, स्वच्छता, सुरक्षा, शिक्षण–अधिगम की प्रक्रिया, शिक्षक–विद्यार्थी सम्बन्ध, विद्यार्थी–विद्यार्थी सम्बन्ध, अनुशासन, विद्यालय प्रशासन, सह–पाठ्यक्रमीय गतिविधियाँ, खेलकूद, सांस्कृतिक गतिविधियाँ, परामर्श व्यवस्था तथा विद्यार्थियों को प्राप्त सहयोग आदि सम्मिलित होते हैं। एक सकारात्मक विद्यालयी वातावरण विद्यार्थी को सुरक्षित, सम्मानित एवं स्वीकार्य अनुभव कराता है। जब विद्यार्थी को यह अनुभव होता है कि शिक्षक उसकी बात सुनते हैं, उसकी कठिनाइयों को समझते हैं, उसकी उपलब्धियों की सराहना करते हैं तथा गलतियों को सुधारने का अवसर देते हैं, तब उसमें स्वयं के प्रति सकारात्मक धारणा विकसित होने की सम्भावना बढ़ती है। इसी प्रकार सहपाठियों के सहयोगपूर्ण व्यवहार से विद्यार्थी में सामाजिक स्वीकार्यता की भावना उत्पन्न होती है, जो उसके आत्मविश्वास के विकास में सहायक हो सकती है। विद्यालयी वातावरण का प्रभाव केवल कक्षा में होने वाले शिक्षण तक सीमित नहीं होता। विद्यालय विद्यार्थी के सामाजिक एवं भावात्मक विकास का भी प्रमुख केन्द्र होता है। विद्यार्थी विद्यालय में विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों का सामना करता है और अपने व्यवहार को दूसरों के व्यवहार के साथ समायोजित करना सीखता है। यदि विद्यालय में सहयोग, समानता, सम्मान, सुरक्षा और सहभागिता की भावना विद्यमान है तो विद्यार्थी स्वयं को विद्यालय का महत्वपूर्ण सदस्य अनुभव कर सकता है। इसके विपरीत भय, अत्यधिक दण्ड, उपेक्षा, पक्षपात, अपमान अथवा असुरक्षित वातावरण विद्यार्थी के आत्मविश्वास को कमजोर कर सकता है। इसलिए विद्यालयी वातावरण को केवल भौतिक सुविधाओं के आधार पर नहीं, बल्कि शिक्षक–विद्यार्थी सम्बन्ध, विद्यार्थियों की सहभागिता, अनुशासन की प्रकृति, भावात्मक सुरक्षा तथा विद्यालय में उपलब्ध अवसरों के आधार पर भी समझना आवश्यक है। राजकीय आश्रम पद्धति विद्यालयों की अपनी विशिष्ट शैक्षिक एवं सामाजिक परिस्थितियाँ होती हैं। इन विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों को विद्यालय परिसर में रहकर शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिलता है। आवासीय व्यवस्था के कारण विद्यार्थियों का दैनिक जीवन विद्यालयी वातावरण से अधिक निकटता से जुड़ा रहता है। उनके अध्ययन, भोजन, आवास, खेलकूद, विश्राम, अनुशासन तथा सामाजिक गतिविधियों का एक बड़ा भाग विद्यालय परिसर में ही सम्पन्न होता है। ऐसी स्थिति में विद्यालय का वातावरण उनके व्यक्तित्व विकास पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकता है। आवासीय विद्यालय में शिक्षक

Nrityanjali Multidisciplinary International Research Journal

Volume 2, Issue 3, July - September 2026

E-ISSN: 3108-1452

NMIRJ Website: https://nrityanjaliresearchjournal.com/home/ Email: info@nrityanjaliresearchjournal.com

एवं अन्य कर्मचारी विद्यार्थियों के दैनिक जीवन से जुड़े रहते हैं। इससे विद्यार्थियों को निरंतर मार्गदर्शन, सहयोग एवं अनुशासन प्राप्त हो सकता है। दूसरी ओर घर से दूर रहना, पारिवारिक वातावरण की कमी, नए सामाजिक समूह में समायोजन तथा विद्यालय की अनुशासनात्मक व्यवस्था जैसी परिस्थितियाँ कुछ विद्यार्थियों के लिए चुनौतीपूर्ण भी हो सकती हैं। ऐसी परिस्थितियों में विद्यालयी वातावरण का स्वरूप विद्यार्थियों के आत्मविश्वास के विकास में विशेष भूमिका निभा सकता है। राजकीय इण्टर कॉलेज भी माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर की शिक्षा प्रदान करने वाली महत्वपूर्ण सरकारी शिक्षण संस्थाएँ हैं। इन विद्यालयों में विभिन्न सामाजिक, आर्थिक एवं ग्रामीण–शहरी पृष्ठभूमि से आने वाले विद्यार्थी अध्ययन करते हैं। विद्यार्थियों की व्यक्तिगत परिस्थितियों, पारिवारिक पृष्ठभूमि, शैक्षिक आकांक्षाओं तथा सामाजिक अनुभवों में भिन्नता हो सकती है। राजकीय इण्टर कॉलेज में विद्यार्थियों को नियमित कक्षा–शिक्षण के साथ खेलकूद, सांस्कृतिक कार्यक्रम, वाद–विवाद, भाषण, विज्ञान एवं अन्य शैक्षिक गतिविधियों में भाग लेने के अवसर प्राप्त होते हैं। इन गतिविधियों में सहभागिता विद्यार्थियों को अपनी क्षमताओं को पहचानने तथा दूसरों के सामने अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान करती है। यदि विद्यालय विद्यार्थियों को पर्याप्त अवसर, प्रोत्साहन और सहयोग प्रदान करता है तो उनमें आत्मविश्वास के विकास की सम्भावना बढ़ सकती है। विद्यार्थियों के आत्मविश्वास को प्रभावित करने वाले विद्यालयी कारकों में शिक्षक का व्यवहार विशेष महत्व रखता है। शिक्षक विद्यार्थी के लिए केवल ज्ञान प्रदान करने वाला व्यक्ति नहीं होता, बल्कि वह मार्गदर्शक, प्रेरक एवं आदर्श की भूमिका भी निभाता है। जब शिक्षक विद्यार्थियों की व्यक्तिगत क्षमताओं को पहचानकर उन्हें आगे बढ़ने के अवसर प्रदान करता है, तो विद्यार्थियों में अपनी योग्यता के प्रति विश्वास उत्पन्न होता है। कक्षा में प्रश्न पूछने, उत्तर देने, चर्चा करने तथा अपनी राय व्यक्त करने के अवसर विद्यार्थियों की अभिव्यक्ति क्षमता एवं आत्मविश्वास को बढ़ा सकते हैं। इसी प्रकार शिक्षक द्वारा की गई उचित प्रशंसा विद्यार्थी को अपनी क्षमताओं के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में सहायता कर सकती है। इसके विपरीत बार–बार डाँटना, सार्वजनिक रूप से अपमानित करना या विद्यार्थियों की तुलना करना उनके आत्मविश्वास को प्रभावित कर सकता है। वर्तमान समय में शिक्षा का उद्देश्य केवल परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करना नहीं है, बल्कि ऐसे विद्यार्थियों का निर्माण करना है जो जीवन की विभिन्न परिस्थितियों का आत्मविश्वासपूर्वक सामना कर सकें, उचित निर्णय ले सकें, सामाजिक सम्बन्धों को प्रभावी ढंग से निभा सकें और अपने उत्तरदायित्वों का निर्वहन कर सकें। इसके लिए विद्यालय में ऐसा वातावरण विकसित करना आवश्यक है जिसमें प्रत्येक विद्यार्थी को समान अवसर, सम्मान, सुरक्षा, सहयोग एवं प्रोत्साहन प्राप्त हो। विशेष रूप से सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के आत्मविश्वास का अध्ययन इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि इन विद्यालयों में विभिन्न सामाजिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करते हैं। विद्यालय उनके लिए केवल शिक्षा का स्थान नहीं, बल्कि सामाजिक विकास एवं व्यक्तित्व निर्माण का महत्वपूर्ण केन्द्र भी होता है। इसी संदर्भ में राजकीय आश्रम पद्धति विद्यालय एवं राजकीय इण्टर कॉलेज में अध्ययनरत विद्यार्थियों के आत्मविश्वास का विद्यालयी वातावरण के संदर्भ में अध्ययन एक महत्वपूर्ण शोध–विषय के रूप में सामने आता है। इस अध्ययन के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया जा सकता है कि दोनों प्रकार के विद्यालयों में विद्यार्थियों के आत्मविश्वास का स्तर किस प्रकार का है तथा विद्यालयी वातावरण के विभिन्न पक्ष उनके आत्मविश्वास से किस सीमा तक सम्बन्धित हैं। साथ ही यह भी जाना जा सकता है कि शिक्षक–विद्यार्थी सम्बन्ध, सहपाठी सम्बन्ध, विद्यालयी अनुशासन, शैक्षिक सुविधाएँ, सह–पाठ्यक्रमीय गतिविधियाँ, भावात्मक सुरक्षा एवं सहभागिता जैसे विद्यालयी वातावरण के पक्ष विद्यार्थियों के आत्मविश्वास को किस प्रकार प्रभावित करते हैं। ऐसे अध्ययन से विद्यालय प्रशासन, शिक्षकों, अभिभावकों तथा शिक्षा–नीति से जुड़े व्यक्तियों को विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के लिए अधिक प्रभावी वातावरण तैयार करने में सहायता मिल सकती है। यदि शोध के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि सकारात्मक विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों के आत्मविश्वास को बढ़ाने में सहायक है, तो विद्यालयों में सहयोगपूर्ण, लोकतांत्रिक, सुरक्षित एवं विद्यार्थी–केंद्रित वातावरण के निर्माण पर अधिक ध्यान दिया जा सकता है। प्रस्तुत अध्ययन न केवल विद्यार्थियों के आत्मविश्वास को समझने में उपयोगी होगा, बल्कि राजकीय आश्रम पद्धति विद्यालयों एवं राजकीय इण्टर कॉलेजों में विद्यार्थियों के समग्र व्यक्तित्व विकास के लिए आवश्यक शैक्षिक परिस्थितियों को पहचानने की दिशा में भी महत्वपूर्ण योगदान प्रदान कर सकता है।

Nrityanjali Multidisciplinary International Research Journal

Volume 2, Issue 3, July - September 2026

E-ISSN: 3108-1452

NMIRJ Website: https://nrityanjaliresearchjournal.com/home/ Email: info@nrityanjaliresearchjournal.com

आवश्यकता एवं महत्व

विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास में आत्मविश्वास की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। आत्मविश्वासी विद्यार्थी अपनी क्षमताओं, योग्यताओं और निर्णय लेने की शक्ति पर विश्वास करता है तथा विद्यालय में आने वाली विभिन्न शैक्षिक, सामाजिक और व्यक्तिगत परिस्थितियों का प्रभावी ढंग से सामना करने का प्रयास करता है। इसके विपरीत आत्मविश्वास का निम्न स्तर विद्यार्थी में संकोच, भय, असुरक्षा, हीन भावना, सामाजिक दूरी तथा शैक्षिक कार्यों में कम सहभागिता जैसी स्थितियाँ उत्पन्न कर सकता है। किशोरावस्था विद्यार्थियों के जीवन की ऐसी अवस्था है जिसमें शारीरिक, मानसिक, भावात्मक तथा सामाजिक परिवर्तन तीव्र गति से होते हैं। इस अवस्था में विद्यार्थियों को शिक्षकों, सहपाठियों, परिवार तथा विद्यालय से मिलने वाला सहयोग उनके आत्मविश्वास के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसलिए यह जानना आवश्यक है कि विद्यालय का वातावरण विद्यार्थियों के आत्मविश्वास को किस प्रकार प्रभावित करता है। विद्यालयी वातावरण में शिक्षक–विद्यार्थी सम्बन्ध, सहपाठियों का व्यवहार, अनुशासन, सुरक्षा, शैक्षिक सुविधाएँ, विद्यालय की भौतिक दशाएँ, सह–पाठ्यक्रम गतिविधियाँ, विद्यार्थियों को अपनी बात रखने के अवसर तथा विद्यालय में उपलब्ध सहयोगात्मक वातावरण जैसे अनेक तत्व सम्मिलित होते हैं। यदि विद्यालय में सकारात्मक, सुरक्षित, सहयोगात्मक एवं प्रोत्साहनपूर्ण वातावरण उपलब्ध हो, तो विद्यार्थी अपनी क्षमताओं को पहचानने, नए कार्यों में भाग लेने तथा चुनौतियों का सामना करने के लिए अधिक प्रेरित हो सकते हैं। राजकीय आश्रम पद्धति विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक एवं सामाजिक परिस्थितियाँ सामान्य राजकीय विद्यालयों से कुछ भिन्न हो सकती हैं। इनमें रहने, भोजन, अध्ययन, अनुशासन तथा सामूहिक जीवन से सम्बन्धित व्यवस्थाएँ विद्यार्थियों के दैनिक अनुभवों को प्रभावित करती हैं। दूसरी ओर राजकीय इण्टर कॉलेजों में विद्यार्थियों को अलग प्रकार का विद्यालयी वातावरण प्राप्त होता है। अतः दोनों प्रकार के विद्यालयों के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास का विद्यालयी वातावरण के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन करना शैक्षिक दृष्टि से उपयोगी हो सकता है। इस अध्ययन से यह समझने में सहायता मिलेगी कि दोनों विद्यालयों में उपलब्ध वातावरण विद्यार्थियों के आत्मविश्वास को किस सीमा तक प्रभावित करता है तथा किन परिस्थितियों में विद्यार्थियों का आत्मविश्वास अपेक्षाकृत अधिक या कम पाया जाता है। अध्ययन के निष्कर्ष विद्यालय प्रशासन, प्रधानाचार्य, शिक्षकों तथा शिक्षा विभाग के लिए उपयोगी हो सकते हैं। इनके आधार पर विद्यालयों में ऐसा वातावरण विकसित करने के प्रयास किए जा सकते हैं जिसमें विद्यार्थी स्वयं को सुरक्षित, सम्मानित और समर्थ अनुभव करें। साथ ही शिक्षकों को विद्यार्थियों की व्यक्तिगत भिन्नताओं, भावनात्मक आवश्यकताओं तथा सामाजिक व्यवहार को समझने में सहायता मिल सकती है। आत्मविश्वास को बढ़ाने के लिए वाद–विवाद, भाषण, खेल, सांस्कृतिक कार्यक्रम, समूह कार्य, नेतृत्व के अवसर तथा अन्य सह–पाठ्यक्रम गतिविधियों को प्रभावी रूप से आयोजित किया जा सकता है। इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन न केवल विद्यार्थियों के आत्मविश्वास की वर्तमान स्थिति को समझने में सहायक होगा, बल्कि सकारात्मक विद्यालयी वातावरण के निर्माण तथा विद्यार्थियों के शैक्षिक, सामाजिक और व्यक्तित्व विकास को अधिक प्रभावी बनाने की दिशा में भी महत्वपूर्ण योगदान प्रदान कर सकता है।

सम्बन्धित शोध साहित्य अध्ययन

हालिडे एवं सहयोगियों (2021) ने माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत किशोर विद्यार्थियों के विद्यालयी वातावरण तथा उनके मनोसामाजिक स्वास्थ्य का अध्ययन किया। अध्ययन में विद्यालयी वातावरण के अन्तर्गत विद्यार्थियों में विद्यालय के प्रति अपनत्व, शिक्षक एवं सहपाठियों के साथ सम्बन्ध, विद्यालयी गतिविधियों में सहभागिता तथा शैक्षिक वातावरण जैसे पक्षों को सम्मिलित किया गया। अध्ययन के निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि सकारात्मक विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों के सामाजिक एवं भावनात्मक विकास के लिए सहायक होता है। जिन विद्यार्थियों को विद्यालय में सहयोग, सुरक्षा, अपनत्व तथा सकारात्मक सम्बन्धों का अनुभव होता है, उनमें बेहतर मनोसामाजिक स्थिति पाई गई। यह अध्ययन प्रस्तुत शोध के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास तथा सकारात्मक आत्म–बोध के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

अंजुम एवं भट (2022) ने माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की विद्यालयी जलवायु एवं आत्म–सम्मान का अध्ययन किया। अध्ययन में सरकारी तथा निजी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया। शोध

Nrityanjali Multidisciplinary International Research Journal

Volume 2, Issue 3, July - September 2026

E-ISSN: 3108-1452

NMIRJ Website: https://nrityanjaliresearchjournal.com/home/ Email: info@nrityanjaliresearchjournal.com

का प्रमुख उद्देश्य विद्यालयी जलवायु तथा विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना था। अध्ययन के निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि विद्यार्थियों द्वारा अनुभव की जाने वाली विद्यालयी जलवायु उनके आत्म–सम्मान से महत्वपूर्ण रूप से सम्बन्धित थी। सकारात्मक विद्यालयी वातावरण वाले विद्यार्थियों में आत्म–सम्मान का स्तर अपेक्षाकृत अधिक पाया गया। सरकारी तथा निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की विद्यालयी जलवायु एवं आत्म–सम्मान की स्थिति में भी अन्तर पाया गया। यह अध्ययन प्रस्तुत शोध के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है, क्योंकि आत्म–सम्मान विद्यार्थियों के आत्मविश्वास का एक महत्वपूर्ण आधार माना जाता है।

हाशमी एवं शाकिर (2023) ने लखनऊ जनपद के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा तथा विद्यालयी जलवायु का अध्ययन किया। अध्ययन का उद्देश्य विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा और विद्यालयी वातावरण के मध्य सम्बन्ध का पता लगाना था। अध्ययन के निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओं को प्रभावित करने वाला महत्वपूर्ण कारक है। सकारात्मक विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों में सीखने के प्रति रुचि, भविष्य के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण तथा उच्च शैक्षिक आकांक्षा विकसित करने में सहायक पाया गया। यह अध्ययन प्रस्तुत शोध से इसलिए सम्बन्धित है क्योंकि सकारात्मक विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों में अपने प्रति सकारात्मक धारणा तथा अपनी क्षमताओं के प्रति विश्वास विकसित करने में सहायक हो सकता है।

दास एवं यादव (2024) ने माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओं पर विद्यालयी वातावरण एवं अभिभावकीय प्रोत्साहन के प्रभाव का अध्ययन किया। अध्ययन में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया। शोध में विद्यालयी वातावरण तथा अभिभावकीय प्रोत्साहन को विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओं से सम्बन्धित प्रमुख कारकों के रूप में देखा गया। अध्ययन के निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि सकारात्मक विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों में उच्च शैक्षिक आकांक्षा के विकास में सहायक होता है। विद्यालय में उपलब्ध सहयोग, प्रोत्साहन तथा सीखने के अनुकूल वातावरण विद्यार्थियों को अपनी क्षमताओं पर विश्वास करने तथा अपने शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्रयास करने हेतु प्रेरित करता है। इस प्रकार यह अध्ययन वर्तमान शोध में विद्यालयी वातावरण तथा आत्मविश्वास के मध्य सम्भावित सम्बन्ध को समझने में उपयोगी है।

रविचन्द्रन एवं सेल्वराज (2024) ने उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा अनुभव किए जाने वाले विद्यालयी वातावरण का अध्ययन किया। अध्ययन में विद्यार्थियों के विद्यालयी वातावरण के प्रति अनुभव को विभिन्न व्यक्तिगत एवं सामाजिक चरों के आधार पर समझने का प्रयास किया गया। अध्ययन में लिंग, ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र, विद्यालय के प्रकार तथा विद्यार्थियों के निवास की स्थिति जैसे पक्षों को ध्यान में रखा गया। निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि विद्यार्थियों द्वारा अनुभव किए जाने वाले विद्यालयी वातावरण में कुछ सामाजिक एवं जनसांख्यिकीय आधारों पर अन्तर पाया जाता है। यह अध्ययन प्रस्तुत शोध के लिए विशेष रूप से उपयोगी है, क्योंकि राजकीय आश्रम पद्धति विद्यालयों में रहने वाले विद्यार्थियों को विद्यालय के साथ–साथ आवासीय वातावरण भी प्राप्त होता है, जबकि राजकीय इण्टर कॉलेज के विद्यार्थियों का विद्यालयी अनुभव अलग प्रकार का हो सकता है। अतः दोनों प्रकार के विद्यालयों के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास का विद्यालयी वातावरण के सन्दर्भ में अध्ययन करना उपयोगी है।

पोदिया, नवनीथम एवं भोला (2025) ने भारत में विद्यालयी जलवायु के किशोर विद्यार्थियों के भावनात्मक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव से सम्बन्धित पूर्ववर्ती अध्ययनों की व्यवस्थित समीक्षा की। समीक्षा में विद्यालयी जलवायु के विभिन्न पक्षों, जैसे शिक्षकदृविद्यार्थी सम्बन्ध, सहपाठी सहयोग, विद्यालय से जुड़ाव, अपनत्व, सुरक्षा तथा सकारात्मक शिक्षण वातावरण का अध्ययन किया गया। निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि सकारात्मक विद्यालयी जलवायु विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान, भावनात्मक स्वास्थ्य तथा शैक्षिक उपलब्धि से सकारात्मक रूप से सम्बन्धित है। इसके विपरीत नकारात्मक विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों में तनाव, भावनात्मक कठिनाइयों तथा निम्न आत्म–बोध को बढ़ा सकता है। यह अध्ययन प्रस्तुत शोध के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि इससे यह आधार प्राप्त होता है कि विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों के आत्मविश्वास और व्यक्तित्व विकास को प्रभावित करने वाला महत्वपूर्ण कारक हो सकता है।

Nrityanjali Multidisciplinary International Research Journal

Volume 2, Issue 3, July - September 2026

E-ISSN: 3108-1452

NMIRJ Website: https://nrityanjaliresearchjournal.com/home/ Email: info@nrityanjaliresearchjournal.com

समस्या कथन

राजकीय आश्रम पद्धति विद्यालय एवं राजकीय इण्टर कॉलेज में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के आत्मविश्वास का विद्यालयी वातावरण के सन्दर्भ में अध्ययन।

चरों का परिभाशीकरण

- **आत्मविश्वास** : प्रस्तुत अध्ययन में आत्मविश्वास से आशय राजकीय आश्रम पद्धति विद्यालय एवं राजकीय इण्टर कॉलेज में अध्ययनरत विद्यार्थियों द्वारा अपनी योग्यता, क्षमता, निर्णय लेने, सामाजिक सम्पर्क, आत्म–अभिव्यक्ति, कठिनाइयों का सामना करने तथा कार्यों को सफलतापूर्वक करने के प्रति अनुभव किए जाने वाले विश्वास के स्तर से है।
- **विद्यालयी वातावरण** : प्रस्तुत अध्ययन में विद्यालयी वातावरण से आशय राजकीय आश्रम पद्धति विद्यालय एवं राजकीय इण्टर कॉलेज में विद्यार्थियों को प्राप्त होने वाली भौतिक सुविधाओं, शिक्षक–विद्यार्थी सम्बन्धों, सहपाठी सम्बन्धों, अनुशासन, शैक्षिक वातावरण, सुरक्षा, सहयोग, प्रोत्साहन तथा विद्यालय से सम्बन्धित अन्य परिस्थितियों के प्रति उनके अनुभव और धारणा से है।
- **राजकीय आश्रम पद्धति विद्यालय** : प्रस्तुत अध्ययन में राजकीय आश्रम पद्धति विद्यालय से आशय उन सरकारी आश्रम पद्धति विद्यालयों से है, जिनमें अध्ययनरत विद्यार्थियों को अध्ययन के साथ आवासीय सुविधा उपलब्ध होती है तथा जिन्हें शोध के लिए अध्ययन समूह के रूप में चयनित किया गया है।
- **राजकीय इण्टर कॉलेज** : प्रस्तुत अध्ययन में राजकीय इण्टर कॉलेज से आशय उन सरकारी इण्टर कॉलेजों से है, जिनमें माध्यमिक अथवा उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों को अध्ययन के लिए चयनित किया गया है।
- **विद्यालय का प्रकार** : प्रस्तुत अध्ययन में विद्यालय का प्रकार एक वर्गीकरणीय चर के रूप में लिया जाएगा। इसके अन्तर्गत विद्यार्थियों को दो समूहों में विभाजित किया जाएगा – (क) राजकीय आश्रम पद्धति विद्यालय, (ख) राजकीय इण्टर कॉलेज।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. राजकीय आश्रम पद्धति विद्यालय एवं राजकीय इण्टर कॉलेज में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों के आत्मविश्वास पर विद्यालयी वातावरण के प्रभाव का अध्ययन।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाऐं

1. राजकीय आश्रम पद्धति विद्यालय एवं राजकीय इण्टर कॉलेज में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों के आत्मविश्वास एवं विद्यालयी वातावरण के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध हैं।

आंकड़ा संग्रहण के उपकरण

- आत्मविश्वास परीक्षण :– डॉ0 रेखा गुप्ता द्वारा निर्मित प्र" नावली।
- विद्यालयी वातावरण परीक्षण :– डॉ0 करुणा भांकर द्वारा निर्मित प्र" नावली।

न्याद"र्

वर्तमान शोध हेतु न्याद" र् के अन्तर्गत यादृच्छिक विधि का प्रयोग कर मुरादाबाद मण्डल के 03 राजकीय आश्रम पद्धति विद्यालय एवं 03 राजकीय इण्टर कॉलेज को लिया जायेगा। जिसके अन्तर्गत न्याद" र् के रुप में 200 विद्यार्थियों को सम्मिलित किया जायेगा।

Nrityanjali Multidisciplinary International Research Journal

Volume 2, Issue 3, July - September 2026

E-ISSN: 3108-1452

NMIRJ Website: https://nrityanjaliresearchjournal.com/home/ Email: info@nrityanjaliresearchjournal.com

परिकल्पनाओं का परिभाशीकरण

तालिका 1

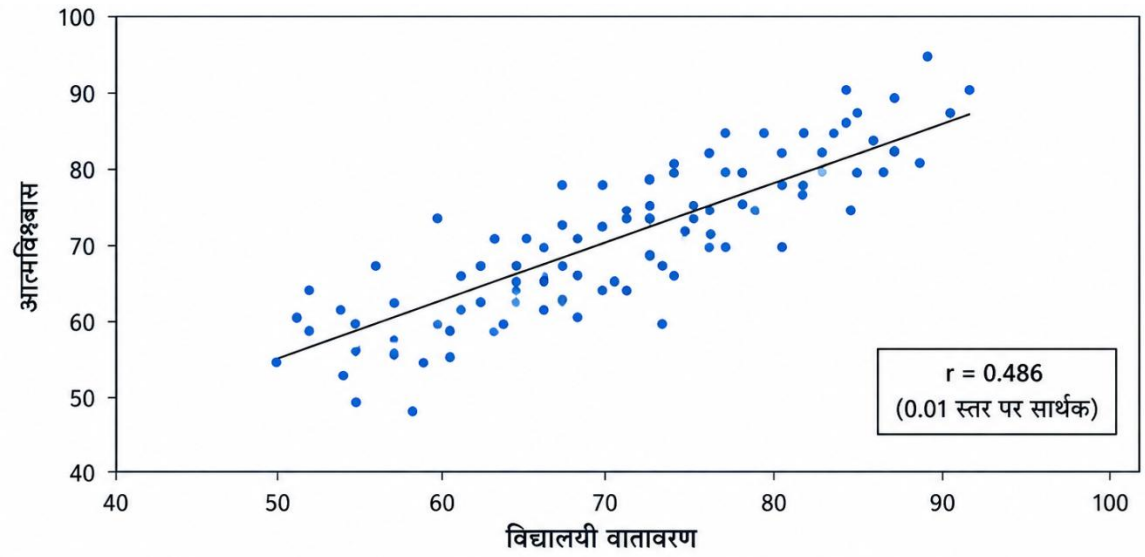
राजकीय आश्रम पद्धति विद्यालय विद्यार्थियों के आत्मविश्वास एवं विद्यालयी वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध

चर	संख्या	माध्य	मानक विचलन	सहसम्बन्ध गुणांक	सार्थकता स्तर
आत्मविश्वास	100	72.46	8.74	0.486	0.01 स्तर पर सार्थक
विद्यालयी वातावरण	100	78.32	9.16		

व्याख्या :– तालिका 1 से स्पष्ट होता है कि अध्ययन में सम्मिलित 100 विद्यार्थियों के आत्मविश्वास का माध्य 72.46 तथा मानक विचलन 8.74 है, जबकि विद्यालयी वातावरण का माध्य 78.32 तथा मानक विचलन 9.16 प्राप्त हुआ। दोनों चरों के मध्य पियर्सन उत्पाद–आघूर्ण सहसम्बन्ध गुणांक 0.486 प्राप्त हुआ, जो 0.01 स्तर पर सार्थक है। सहसम्बन्ध गुणांक धनात्मक होने के कारण यह कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों के विद्यालयी वातावरण और आत्मविश्वास के मध्य धनात्मक सम्बन्ध विद्यमान है। अर्थात् अपेक्षाकृत अनुकूल विद्यालयी वातावरण वाले विद्यार्थियों में आत्मविश्वास का स्तर भी अपेक्षाकृत अधिक पाया जाता है। अतः "राजकीय आश्रम पद्धति विद्यालय में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों के आत्मविश्वास एवं विद्यालयी वातावरण के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध है" परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

ग्राफ संख्या 1

राजकीय आश्रम पद्धति विद्यालय विद्यार्थियों के आत्मविश्वास एवं विद्यालयी वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध की ग्राफीय स्थिति



तालिका 2

राजकीय इण्टर कॉलेज विद्यालय विद्यार्थियों के आत्मविश्वास एवं विद्यालयी वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध

Nrityanjali Multidisciplinary International Research Journal

Volume 2, Issue 3, July - September 2026

E-ISSN: 3108-1452

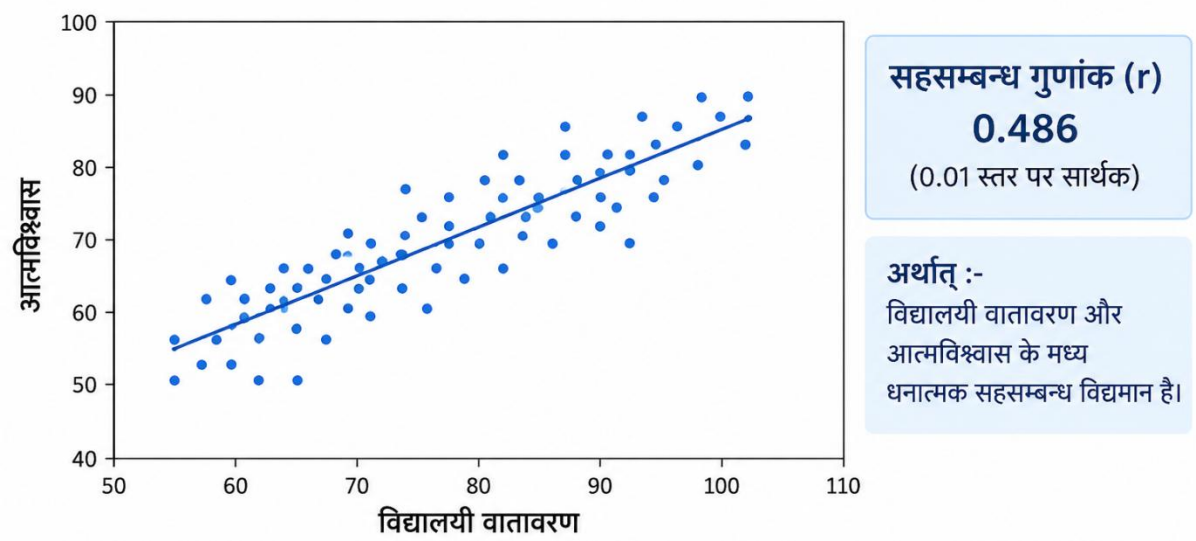
NMIRJ Website: https://nrityanjaliresearchjournal.com/home/ Email: info@nrityanjaliresearchjournal.com

चर	संख्या	माध्य	मानक विचलन	सहसम्बन्ध गुणांक	सार्थकता स्तर
आत्मविश्वास	100	70.84	8.52	0.452	0.01 स्तर पर सार्थक
विद्यालयी वातावरण	100	76.95	9.03		

व्याख्या :– तालिका 2 से स्पष्ट होता है कि अध्ययन में सम्मिलित राजकीय इण्टर कॉलेज के 100 विद्यार्थियों के आत्मविश्वास का माध्य 70.84 तथा मानक विचलन 8.52 है, जबकि विद्यालयी वातावरण का माध्य 76.95 तथा मानक विचलन 9.03 प्राप्त हुआ। दोनों चरों के मध्य पियर्सन उत्पाद–आघूर्ण सहसम्बन्ध गुणांक 0.452 प्राप्त हुआ, जो 0.01 स्तर पर सार्थक है। सहसम्बन्ध गुणांक धनात्मक होने के कारण यह कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों के विद्यालयी वातावरण और आत्मविश्वास के मध्य धनात्मक सम्बन्ध विद्यमान है। अर्थात् जिन विद्यार्थियों को विद्यालयी वातावरण अपेक्षाकृत अधिक अनुकूल प्राप्त होता है, उनमें आत्मविश्वास का स्तर भी अपेक्षाकृत अधिक पाया जाता है। अतः "राजकीय इण्टर कॉलेज में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों के आत्मविश्वास एवं विद्यालयी वातावरण के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध है" परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

ग्राफ संख्या 2

राजकीय इण्टर कॉलेज विद्यालय विद्यार्थियों के आत्मविश्वास एवं विद्यालयी वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध की ग्राफीय स्थिति



मुख्य निष्कर्ष

1. राजकीय आश्रम पद्धति विद्यालय एवं राजकीय इण्टर कॉलेज में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों के आत्मविश्वास एवं विद्यालयी वातावरण के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- Halliday, S., Gregory, T., Taylor, A., Digenis, C., & Turnbull, D. (2021). The impact of bullying victimization in early adolescence on subsequent psychosocial and academic outcomes across the adolescent period: A systematic review. *Journal of School Violence*, *20*(3), 351–373. https://doi.org/10.1080/15388220.2021.1913598

- Hashmi, A. T., & Shakir, M. (2023). Educational aspiration and school climate of secondary school students: A study of district Lucknow. *International Journal of Applied Research, 9*(6), 107–110. https://doi.org/10.22271/allresearch.2023.v9.i6b.10924
- Das, M., & Yadav, A. K. (2024). Secondary school students' educational aspirations: The impact of the school environment and parental encouragement. *International Research Journal*.
- Podiya, J. K., Navaneetham, J., & Bhola, P. (2025). Influences of school climate on emotional health and academic achievement of school-going adolescents in India: A systematic review. *BMC Public Health, 25*(1), 54. https://doi.org/10.1186/s12889-024-21268-0